**eISSN 2581-8996**
[Date]
**THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)**
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

# शिवप्रसाद सिंह के लक्ष्य केन्द्रित लेखन की सार्थकता

[1]डॉ0 वाचस्पति
[1]एसोसिएट प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू कॉलेज एटा (उ0प्र0)

Received: 12 Jan 2020, Accepted: 19 Jan 2020, Published on line: 30 Jan 2020

## Abstract

साहित्य के प्रति लेखक के निजी दृष्टिकोण से सम्यक परिचय प्राप्त कर लेने से उसके साहित्य को समझने और उसके विवेचन में पर्याप्त सहायता मिलती है। अतः साहित्य और साहित्य के अनेक पहलुओं के संबंध में डॉ0 शिवप्रसाद सिंह के विचार को संक्षेप में जान लेना अप्रासंगिक और असंगत नहीं होगा।

साहित्य के संदर्भ में प्रतिभा और अभ्यास का प्रश्न बहुत पुराना है। साहित्यकार की साहित्यिक प्रतिभा जन्मजात होती है या मात्र लेखन का अभ्यास उसे इस योग्य बनाता है? इस विषय में शिवप्रसाद जी का कहना है कि प्रतिभा ही एक ऐसी शक्ति है जो किसी न किसी अनुपात में मनुष्य मात्र को उपलब्ध होती है। वह कुछ लोगों के भीतर बाह्य और आंतरिक परिस्थितियों और वातावरण के कारण अचानक प्रबद्ध और सक्रिय हो जाती है, परन्तु मात्र प्रतिभा ही साहित्य रचना के लिये पर्याप्त नहीं है, लेखन के लिये अनवरत श्रम की भी आवश्यकता है, तभी प्रतिभा की पूर्ण क्षमता का विकास हो सकता है। इनकी सम्मति में सफल लेखक बनने के लिये बार–बार अपने ही लिखे को पढ़ना चाहिए। रचना करते वक्त उसके प्रति जो मोह उपजता है उसे तोड़ते रहना चाहिए। राष्ट्र के उत्थान और पतन में साहित्य के योगदान पर उनके विचार अत्यन्त स्पष्ट हैं। साहित्य मरी कौमों को जिलाता है, समाज को पतित भी करता ही होगा, पर उनके अनुसार ये सब मुगालतें साहित्यकार बनाते है। साहित्यकार आम आदमी के साथ यदि खड़ा होकर उसकी जिन्दगी का सही साक्ष्य दे सके, उसकी रचनायें उसके परिवेश और समय का दस्तावेज बन सकें तो भी बहुत है। साहित्यकार की अपने समय और समाज के निर्माण में एक अहं भूमिका होती है। आधुनिक वैज्ञानिक युग में उसके सामने एक नयी चुनौती प्रस्तुत की है। अतः इस अभिव्यक्ति संकट के युग में एक नयी भूमिका और चुनौती को लेकर खतरनाक मोड़ से गुजरते हुए जनता का मार्गदर्शन करना पहले से काफी जटिल हो गया है।

**Key words:-** शिवप्रसाद सिंह, लक्ष्यकेन्द्रित लेखन, अभिव्यक्ति संकट, सार्थकता, साहित्यकार, समाज।

**eISSN 2581-8996**
[Date]
**THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)**
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

# Introduction

शिवप्रसाद सिंह जी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार है। वह नयी कहानी के प्रथम कहानीकार के साथ–साथ उत्कृष्ट उपन्यासकार, आलोचक, निबंधकार और नाटककार भी है और इन सभी क्षेत्रों में अपना मानक और मौलिकता के कारण चर्चा के केन्द्र भी रहे हैं। उनके साहित्य पर अरविन्द दर्शन और अस्तित्ववादी दर्शन का गहरा प्रभाव भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। उनकी कहानियों में व्यक्ति की संवेदना का बारीकी के साथ चित्रण और सजीव पात्रों की सृष्टि की गयी है। बड़े स्पष्ट शब्द में वे लिखते है– "आज सामाजिक प्रतिबद्धता का नारा और युगीन प्रासंगिकता की बातें तो बहुत सुनाई पड़ती हैं, पर सामाजिक प्रतिबद्धता केवल नारे की चीज नहीं होनी चाहिए। समाज के दलित, शोषित, पीड़ित वर्ग के प्रति सही दृष्टि जीवन से सीधे उद्भूत होती है, बशर्ते आपकी दृष्टि मानव नियति को सही ढंग से सहानुभूतिपूर्वक समझने में कतराती न हो। अपनी जमीन पर खड़े ये पात्र जो असलियत की गवाही देते है वह सबसे बड़ी प्रतिबद्धता है और लेखक यथार्थ की इस भाव–भंगी को पकड़ने के लिए सर्वथा प्रतिबद्ध रहा है। समय तेजी से बदल रहा है। संकुचित प्रतिबद्धता की बात करके विभाजक रेखा खींचने के माहिर लोगों को भी यह सोचना पड़ेगा कि उन्हें प्रतिबद्धता की माला जपने और ऊपर–ऊपर से जीवन को सतही रूप से छूने वालों की जरूरत है या उनकी जो जीवन के कठोर से कठोर यथार्थ की सूक्ष्म छवियों की सारी संसक्ति के साथ उकेरने में मौन रूप से लगे हुए हैं।"

आधुनिक साहित्य में "प्रतिबद्धता" की बात प्रायः उठाई जाती है। चीनी आक्रमण के दिनों में साहित्यकार बनाम युद्ध की चर्चा छिड़ी थी। साहित्यकारों का एक वर्ग "कला और सौन्दर्य" के नाम पर युद्ध को साहित्य का विरोधी घोषित करता है किन्तु शिवप्रसाद सिंह ऐसा नहीं मानते। वे युद्ध पर लिखे गये साहित्य को "भड़भड़िया साहित्य" तो कहते हैं पर उसका पक्ष लेते हुए कहते हैं कि "ऐसी रचनायें प्रायः ही उत्तम नहीं होतीं यह भी ठीक है। शाश्वत साहित्य की तुलना में ये क्षणजीवी होती हैं, यह भी ठीक है किन्तु क्या लड़ाई के काम में आने वाले अस्त्र–शस्त्र शाश्वत होते हैं। इसके आगे वे लिखते हैं, नियति का व्यंग्य भी कभी–कभी कितना तीखा होता है। ठीक मौके पर जब हमारे कलावादी आधुनिक लेखक युद्ध के बारे में शंका के दौर से गुजर रहे हैं, रूसी लेखक शोलोखोव को नोबेल पुरस्कार देने की घोषणा की गयी है। शोलोखोव का सारा साहित्य नाजी आक्रमण और युद्ध के विरोध में लड़ती जनता के धैर्य और साहस का दस्तावेज नहीं तो और क्या है।"2

**eISSN 2581-8996**
[Date]
**THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)**
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

इन्होंने पूरे कथा साहित्य में आज के आदमी को पहचानने की कोशिश की है। आदमी की पहचान से इनका तात्पर्य है कि आदमी एक व्यक्ति नहीं, एक धारा है। उसमें आदमी आते हैं और जाते हैं। इनकी एक कहानी भी धारा नाम की है। कौन धारा के विपरीत बहना चाहता है और कौन धारा के साथ बहना चाहता है, यह सब कुछ पहचानना ही इनके कथा साहित्य का उद्देश्य है। इन्होंने स्वयं कहा है कि "मेरे लेखन की प्रेरणा मेरे आस–पास के जीवन को जीने वाला सामान्य आदमी है। मैं लिखता तो उसी के लिए हूँ पर सामाजिक ढाँचा ऐसा है कि उस सामान्य आदमी के एक बहुत छोटे हिस्से तक मेरा लेखन पहुंच पाता है। मैं इस अवरोध को तोड़ने के लिए प्रयत्न भी करता हूँ और इसे ही लेखन की प्रेरणा भी मानता हूँ।"3

आधुनिक लेखन में रचना प्रक्रिया के प्रति अतिशय जागरूकता एक महत्वपूर्ण घटना है। आकस्मिक नहीं है कि अनेक प्रतिभाशाली कथाकारों और कवियों की कृतियाँ रचना प्रक्रियाओं की भूमिकाओं के रूप में है। रचना प्रक्रिया की यह चेतना आधुनिकता से उत्पन्न है। आधुनिक हिन्दी कहानी का प्रमुख वैशिष्ट्य रचना प्रक्रिया के प्रति यही जागरूकता है और भावबोध या रचना–शिल्प की अन्य विशेषताएं भी प्रायः उसी से संक्रमित हैं। रचनात्मक कर्म और प्रयोजन के प्रति जागरूकता जिस रूप में आधुनिक कहानी लेखकों में दिखाई देती है, वह पहले के कथाकारों में प्रेमचंद तथा प्रसाद को छोड़कर दूसरे किसी लेखक में नहीं दिखायी देती।

आजादी के बाद का ढपोरशंखी आश्वासनों का काल और फिर शर्मनाक भिक्षाकाल, दरिद्रता, बेरोजगारी, मूल्यवृद्धि, चोरबाजारी, कृत्रिम अभाव, विपन्नता से आक्रांत रहा है। बकौल कमलेश्वर "करघे हैं तो सूत नहीं है, खाद है तो बीज नहीं हैं। कच्चा माल है तो ईधन नहीं है। ईधन है तो डिब्बे नहीं हैं। डिब्बे हैं तो रेलवे लाइन मजबूत नहीं है। अणुशक्ति है तो उसके उपयोग का कार्यक्रम नहीं है। मतलब यह कि जिस आर्थिक क्रान्ति की पूरी संभावना थी वह नहीं हुई।"4 अर्थयंत्र की यह कुल–बुलाती पीड़ा हिन्दी कहानी में सर्वथा परिवर्तित कथ्य, दृष्टिकोण, स्वर, शिल्प और भाषा देने के लिए काफी थी। जिससे नयी कहानी का आविर्भाव हुआ। 19वीं शताब्दी के बौद्धिकों में भी जो सभी तरह से भारत में आधुनिक विचारधारा के अग्रदूत कहे जा सकते हैं, उसमें एक वर्ग ऐसा था जो भारतीय सभ्यता, संस्कृति, कला, साहित्य और विचारधारा को इर्द–गिर्द चिपके वातावरण में आधुनिकता के सभी मूलभूत तत्वों को खोजने वाला यह वर्ग न सिर्फ ज्ञान–विज्ञान, विचार–दर्शन और धर्म–संस्कृति के क्षेत्र में ही

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

खुले आयात का समर्थक था, बल्कि रीति–रिवाज, शादी–ब्याह, खान–पान और वेशभूषा में भी उन्हीं का नकलची रहा।

हिन्दी के अधिकांश प्रबुद्ध साहित्यकार ज्वलंत सामाजिक और राजनीतिक प्रश्नों से अलग रहना उचित समझते हैं। स्वतंत्रता के पहले इस देश के साहित्यकारों की स्थिति ऐसी नहीं थी। यद्यपि यह आज सार्वजनिक रूप से कहा जाता है कि छायावादी कवि व्यक्तिवादी, समाजभीरू, एकांतखोजी और पलायनवादी थे, किन्तु उनके पूरे साहित्य को उलटने–पलटने वाला हर पाठक जानता है कि शायद ही कोई ऐसा छायावादी हो जिसने राष्ट्रीय गौरव का ज्ञान न किया हो, बलिपंथी को अपनी श्रद्धांजलि न दी हो, विवेकानंद के धार्मिक अभियान से गौरव का अनुभव न किया हो, समाज में गरीबी, दीनता और शोषण जैसी समस्याएँ भी उसे कुरेदती रहीं और एक जमाना आया कि यथार्थवाद की ओर ज्यादा झुकाव रखने वाले छायावादी लेखकों में प्रगतिवाद के पथ पर कहानी लिखना शुरू किया। "साहित्य की पुकार सार्वभौम और सर्वकालीन है क्योंकि वह स्थायी अनुभूतियों और चिरंतन सत्यों का चित्रण करता है। साहित्य के मूल्यों की चिरंतनता उनकी स्थिरता में नहीं बल्कि उनके विकास के सातत्य में है और गुप्त जी जिसे चिरंतन कहते हैं असल में उसे ही लोग धाराच्युत और रूढ़ि कहते है। कूटस्थ सार्वभौमिकता साहित्य में कभी गुण नहीं मानी गई है।"5 शिवप्रसाद सिंह जी ने भारतीय समाज में स्त्री और साधारणजन की स्थिति को देखकर ही कहानी लिखना शुरू किया। स्वयं एक छोटे–मोटे जमींदार परिवार से आने के कारण कुछ लोगों ने सामंती मूल्यों के प्रति उनके अतिरिक्त उत्साह और हिमायत की शिकायत भी की थी ।

आज कहानी ने साहित्यिक अभिव्यक्ति की एक अत्यंत अर्थपूर्ण, कलापूर्ण एवं संभावनायुक्त विधा के रूप में पर्याप्त विकास कर लिया है। कहना न होगा कि हिन्दी कहानी के विकास के हर मोड़ पर "नवीनता" का एक ऐतिहासिक संदर्भ है। निरंतर विकसित होती हुई कहानी को अधिकाधिक आयामों में देखने के लिए, उसकी समग्र पहचान के लिए कहानी के तत्व रूपी चौखटे अधूरे अपर्याप्त सिद्ध हुए हैं। अन्य साहित्यिक रूपों की तरह कहानी भी जीवन को समझने का एक माध्यम है, इसलिए कहानी संबंधी सामान्य धारणा को, कहानी–शिल्प सम्बन्धी आलोचनाओं, प्रचलित रूढ़ियों और फार्मूलों को मुख्य मान कर उनके आधार पर कहानी को फिट करने या मिस–फिट करने की दृष्टि ही घातक है। साहित्य के रचनात्मक के साथ तथा साहित्य में व्यक्त रसानुभूति के परिवर्तित संदर्भों के साथ ही समीक्षा के पूर्व निर्धारित तत्वों पर पुनर्विचार आवश्यक हो जाता है। कहानी को "रचना" मानते हुए

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

और उसकी रचनात्मक संभावना पर दृष्टि रखते हुए हमें कहानी कला के पूर्व निर्धारित तत्वों की उपयोगिता पर पुनः विचार करने की आवश्यकता तब और भी अधिक बढ़ जाती है।

शिवप्रसाद सिंह जी ने भारतीय समाज में स्त्री और साधारण जन की स्थिति को लेकर डॉ. लोहिया के गहरे कन्सर्न की चर्चा की है। शिवप्रसाद सिंह ने एक कहानीकार की हैसियत से स्वयं भी इन दोनों मोर्चों पर गहराई से सोचा है और इसे अपने रचनात्मक सरोवर के रूप में स्वीकार भी किया है। स्वयं एक छोटे–मोटे जमींदार परिवार से आने के कारण कुछ लोगों ने सामंती मूल्यों के प्रति उनके अतिरिक्त उत्साह और हिमायत की शिकायत भी की थी। "नारी हर रूप में श्रेष्ठ होती है, जो खून को दूध में बदल सकती है, उसे प्रकृति ने ही श्रेष्ठ बनाया है। पर आज की हिन्दुस्तानी नारी शताब्दियों के अंधतमस में इस तरह डूबी हुई है कि अपनी शक्ति को ही भूल गयी है।"6 शिवप्रसाद जी ने अपने कथा साहित्य की रचनात्मक भूमिका को अपने "कबीर" की तरह आँखों देखी यथार्थ के धरातल पर संजोया है। अतः नकली सृजनात्मकता का चटकारापन वहाँ नहीं मिलेगा। जैसे शहरी बाबू अपने ड्रॉइंग रूम को बबूल के कांटे या नागफनी से सजाते हैं, अथवा फोक आर्ट के नमूनों से दर्शकों को चौंकाते हैं। ऐसे लोग भदेश शब्दों के इस्तेमाल, बोली के प्रयोगों के अनमेल प्रयोग तथा ऊपर–ऊपर के जीवन की बातें चमका कर अपना प्रचार करते रहे। पसीना, मेहनत, मसक्कत ऐसे शब्दों का प्रयोग कर देने भर से गाँव की जिन्दगी की यथार्थता व्यक्त नहीं हो जाती। ऐसे कथाकार अपनी रोमनी चाशनी में डुबाकर सस्ती संवेदना को व्यक्त कर अच्छी प्रतिष्ठा पा गये, पर हिन्दी के पाठक को कथाकार और कथागायक में फर्क करना मुश्किल नहीं लगा।

शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन के समसामयिक विविध पहलुओं को चित्रित किया गया है। ग्रामांचल के प्रति आपका विशेष लगाव है। वास्तव में इनके कथा निर्माण में सामाजिकता समवाय रूप में वर्तमान है। मानव के प्रति आप में गहरी संवेदना विद्यमान है विशेषकर उस मानव के प्रति जो व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं व रूढ़ियों से ग्रस्त है। वे कहते हैं कि "मनुष्य और उसकी जिन्दगी के प्रति मुझे मोह है, जो अपने अस्तित्व को उबारने के लिए विविध क्षेत्रों में विरोधी शक्तियों से जूझ रहा है, अंधविश्वास, उपेक्षा, विवशता, प्रताड़ना, अतृप्ति, शोषण, राजनीति, भ्रष्टाचार और क्षुद्र स्वार्थान्धता के नीचे पिसता हुआ भी जो अपने सामाजिक और मनोवैज्ञानिक हक के लिए लड़ता है, हँसता है, बार–बार गिर कर भी जो अपने लक्ष्य से मुंह नहीं मोड़ता वह मनुष्य तमाम शारीरिक कमजोरियों और मानसिक दुर्बलताओं के बावजूद महान है।"7 ऐसे मनुष्य को उसकी

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

सम्पूर्णता में अभिव्यक्त करना ही इनका उद्देश्य है। गरज यह है कि इनके कथा–साहित्य में सामाजिक यथार्थ की सूक्ष्म पकड़ पर्याप्त गहरी है। इनकी कहानियाँ जीवन के प्रति, मानवता के प्रति प्रतिबद्ध हैं। जिन्दगी इनके केन्द्र में है। जीवन के सभी पक्ष एवं सभी स्तर यहाँ व्यक्त हुए हैं। अब तक की सभी कहानियों के केन्द्र में जिन्दगी ही थी, परन्तु यह जिन्दगी रूमानी, मनोरंजक, हल्की–फुल्की, अयथार्थ, स्वप्नजीवी एवं रंगीन हुआ करती थी। बाद में मात्र यथार्थ जिन्दगी ने वह स्थान ले लिया।

नये कहानीकारों ने जिन्दगी को जिन्दगी के रूप में अनुभव पर ग्रहण किया और संवेदनात्मक स्वर में व्यक्त किया है। इन कहानियों का कथ्य इकहरा नहीं है। शिवप्रसाद सिंह के पहले कहानी संग्रह "आर–पार की माला" में उत्तर जमींदारी युग रूपायित हुआ है। यह गाँधीवाद और आदर्शवादी प्रभाव से अमुक्त अमोह–भंग की स्थिति का काल है। आधुनिकता अभी आँखें बोल रहीं है। बहुत से आलोचक कथाकार इस आस्थावाद को आधुनिकता बोध का विरोधी मानते है लेकिन इससे ग्रामीण जीवन जीवनांकन में प्रामाणिकता आती है। "कर्मनाशा की हार" संग्रह में नयी मानवीय संवेदनाएँ और ग्राम जीवन के नये कोण उभरे हैं। राष्ट्रीय जीवन में मोह भंग की स्थितियाँ अब स्पष्ट होने लगी थी। वे दीन–हीन और दलित लोग जो स्वराज्य के साथ अत्यधिक आशावान हो उठे थे, हताश होकर टूटने लगे गरीबी और अमीरी के बीच खाई और बढ़ने लगी। कथाकार समाजोन्मुखी मुद्रा त्याग कर व्यक्तिवादी हो उठा। व्यक्ति का आहत अहं निजत्व में सिमटने लगा। आधुनिकता यहाँ अमुखर आंतरिक विक्षोभ–विद्रोह की स्थिति का दस्तावेज बन कर प्रस्तुत है। कथा–साहित्य में "मुसहर", "बिन्दा महाराज", "हिजड़ा", "गुलाबी", "मजूरित", "वशीर", "सपेरा", "टीमल", "कुम्हार" आदि जीवन्त पात्रों का आगमन होता है।

कहानीकार शिवप्रसाद सिंह ने सम्पूर्ण कथा साहित्य के विविध वस्तु का विवेचन किया है। शिवप्रसाद सिंह की इन कहानियों में से कुछ में शोषण और अत्याचार का अंकन हुआ है लेकिन जो इस अत्याचार के शिकार हैं, उन्हें इसकी कोई चेतना नहीं है। यही कारण है कि इन कहानियों में वर्ग चेतना कहीं भी स्पष्टता से नहीं उभर सकी है। सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षावाले पात्रों का इन कहानियों में दयनीय अभाव दिखाई देता है। "मास्टर सुखलाल" को हड़ताल में हिस्सा लेने और माफी न मांगने के कारण बर्खास्त कर दिया जाता है। उनकी पड़ोसिन और "मैं" उन्हें आत्मीयता से देखते हैं। लेकिन सुखलाल के निर्णय और आगामी कार्यक्रम का कोई संकेत कहानी में नहीं है। उनके सहज अज्ञान और उत्साह के अतिरेक को लेकर उनके प्रति उपहास की गंध ही अधिक आती है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

"उस दिन तारीख थी" में देवसिंह अगली तारीख पड़ जाने की स्थिति में गाँव लौटते हुए पुल की चहारदीवारी पर बैठकर स्थिति का जायजा लेने की कोशिश करता है। मन में बिना कोई भाव लाये वह अपनी थकान और ढीलेपन को लेकर सोचने लगता है। "बड़ी से घुएं में घृणा, झिड़की और शिकायत के रंग मिलते जाते है। थोड़ी देर को लगता है कि इस बीच वह कुछ निर्णय भी लेता है। इस बार उसकी आखें डबडबाती नहीं हैं।"8 उनमें एक चमक भी दिखाई देती है। फेंककर जब वह उठता है तो उसकी मुट्ठियाँ भिंची होती हैं, लेकिन उसका यह नाटकीय आक्रोश किसके प्रति है। यह ठाकुर देवनाथ के प्रति है जिसने उसकी फसल बरबाद कर दी है या मुख्तार और कचहरी के दूसरे अमले के प्रति जिसकी कफन–घसीट पृवृत्ति के कारण गाड़ी के किराये के पैसे भी उसके पास नहीं रह गये हैं और उसे पैदल ही गाँव लौटना पड़ रहा है।

कहानी में "घटनाओं" के निर्णायक चरित्र ही हो सकते है और घटनाओं का निर्माण कहानी में "चरित्रों" के निदर्शन के लिए ही किया जाता है। इसीलिये शिवप्रसाद सिंह के चित्त में कहानी रचना के समय पहले चरित्र ही एकत्र होते हैं, फिर उनके इर्द–गिर्द घटनाएँ सिमटती हैं। हो सकता है, इस रचना–प्रक्रिया में कथानक बिखरने की सम्भावना विद्यमान हो, पर आधुनिक कहानी के लिये यही पद्धति अनुकूल पड़ती है क्योंकि ये कहानियाँ चरित्रों को परिस्थितियों के अधिक गहरे परिणार्श्व में चित्रित करती हैं और उन्हें रचनाकार के भाव बोध का वाहक यंत्र नहीं बनने देतीं। डॉ0 शिवप्रसाद सिंह स्वीकार करते हैं कि "सृजन प्रक्रिया की दृष्टि से उन्हें परिस्थितियों से सम्वलित आश्लेषित चरित्र पहले आकृष्ट करते हैं, बाकी चीजें बाद में।"9 इसी प्रकार परिणाम है कि इसकी अनेकानेक कहानियाँ चरित्र प्रधान हैं और इनकी पचास प्रतिशत से अधिक कहानियों की प्रेरणा में चरित्रों का योग है। उनकी "हीरों की खोज" एक ऐसी ही कहानी है जिसमें लेखक ने बोधन तिवारी के चरित्र को बड़ी तन्मयता और श्रद्धा के साथ हीरों के रूप में प्रस्तुत किया है। लेखक कहानी की शुरूवात में ही लिखता है "मुझे अपने परिचितों में एक भी ऐसा नहीं मिलता जिस पर कोई कहानी लिखी जा सके यों मेरे गाँव में ही कोई पांच–छह सौ से अधिक आदमी हैं, सब अपनी तरह से निराले। मगर लाख कोशिश करने पर भी जब कोई नहीं मिलता तो हार कर बुद्धि फिर बोधक तिवारी के पास पहुँचती है जिसके पास फटकने की हिम्मत भी कम ही करते हैं।"10 कथाकार का इस चरित्र से आकर्षण और लगाव का एक कारण यह भी है कि "विशाल चट्टान सी तनी छाती, खिंची मूँछें और उस सुडौल काया से गजशुण्ड की तरह झूलती बाहों वाले तिवारी सूरत से काफी भद्दे हैं।"11 इसकी भी एक दिल

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

हिला देने वाली कहानी है जो उनके बचपन में अपनी पागल माँ के कारण घटती है मगर इससे भी बड़ी घटनाएँ और हादशा उनके जीवन में घटा है। जहाँ कोई भी व्यक्ति अपना संयम और धैर्य खो सकता मगर तिवारी जी उसे भी हंस कर पी जाते हैं अंत में लेखक लिखता है "बोधन तिवारी की जिंदगी में मौत का क्या खौफ और आएगी एक दिन वह जरूर और यह मौत से भी दूरी होगी। तब तक हम पाठकों के साथ इन्तजार करें और सोचें कि ऐसे अपशकुन आदमी को क्या किसी कहानी का हीरो बनाया जा सकता है।"12 इस प्रकार कथाकार कहानी के माध्यम से एक जलता हुआ सवाल अपने पाठक से करके मौन हो जाता है।

शिवप्रसाद जी की रचना प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण बिन्दु वस्तुओं के स्वभाव से संबंधित है। जिसके विषय में लेखक कहता है कि "कथाकार की जागरूकता इस बात में नहीं है कि वह मानव और पदार्थों के संबंधों को स्वयंसिद्ध बनकर चले, बल्कि व्यक्तियों और पदार्थों के बीच आंतरिक स्तर पर बनते–बिगड़ते संबंधों के प्रति सतत् जागरूकता रहे। वस्तुओं और मनुष्य के बीच अनजाने स्थापित संबंध कब टूट या बदल जाया करते हैं, ऐसा दो स्थितियों में होता है। एक तो असामान्य मनः स्थिति में, दूसरे अबोध अचेतनता में।"13 उदाहरण के लिए "मुरदा सराय" के "मैं" को अपनी पत्नी की मृत्यु से आधारित परिस्थिति में मानव और जड़ पदार्थों के बीच परिचय सूत्र कटा सा प्रतीत होने लगता है। तथा "खैरा पीपल कभी न डोले" कहानी के अबोध बच्चे उस पीपल को, जिसकी छाया में वे अनेक खेल रचाते थे, अचानक भूल जाते हैं।

ग्राम कथाकार शिवप्रसाद सिंह जी ने लिखा है कि अब तक के साहित्य में मनुष्य को लघु बना कर उसकी काफी कदर्थना की जा चुकी है तब हम यह मानते थे कि "शॉक ट्रीटमेंट" का भी एक प्रयोजन होता है। मनुष्यता जहाँ खड़ी है, पचास "मेगावट" के अणु विस्फोट से बड़ा आघात क्या हो सकता है। शायद अणु–युद्ध। क्या हमें उसी की प्रतीक्षा है? यदि नहीं, तो मनुष्य की मनुष्यता को उभारने के लिए साहित्य को कटिबद्ध होना ही पड़ेगा। हमारी आधुनिकता की यही माँग है कि जो "स्पृद्य" टूटने जा रहा है, उसे टूटने से बचाएँ। इस प्रवृत्ति की निन्दा करते हुए वे स्पष्ट कहते हैं– "मैं गाँव के कहानीकारों द्वारा ठूस–ठूस कर अनावश्यक ढंग से प्रयुक्त होने वाले भदेस शब्दों को पसंद नहीं कर सकता। जहाँ परिनिष्ठित हिन्दी के शब्द प्राप्त नहीं, वहाँ तो देशी, जनप्रचलित शब्द आवश्यक हैं और वे एक नयी शक्ति भी पैदा करते हैं। पर सिर्फ यह दिखाने के लिए कि कहानी गाँव की है, ऐसे शब्दों का भराव कहानी को बेडौल बनाता है।"14

**eISSN 2581-8996**
[Date]
**THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)**
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

ग्राम कहानीकारों ने मुहुवे के फूलों की गंध की भांवरे लगाई हैं किन्तु रोमांस क्या इतना कदर्थ्य है। यथार्थ और रोमांटिक दृष्टि क्या परस्पर विरोधी वस्तुएँ हैं। यह बहुत बड़े विवाद का विषय रहा है, इसलिए मैं इस पर कुछ ऐसा नहीं कह सकूँगा, जो नया हो। पुरानी बातों में से ही एक मैं यहाँ इसलिए दुहरा देना उचित मानता हूँ क्योंकि उसकी सच्चाई में अब भी कोई फरक नहीं मालूम होता है। रोमेंटिसिज्म का हवसशील, पलायनवादी और निष्क्रियताजनक रूप अवश्य ही त्याज्य है किन्तु रोमांस एक बहुत बड़ी ताकत भी है। यदि इसका सही संतुलित और जीवनोन्मुखी प्रयोग किया जा सके तो वह साहित्य और समाज के लिए आज भी उपयोगी होगा। गोर्को ने "पाल वर्ले एण्ड डिकेडेट्स" शीर्षक निबंध में रोमेण्टिसिज्म के हवसशील पक्ष की घोर निन्दा करते हुए भी उसके उन्नयकारी रूप की तारीफ की है और "रोमांण्टिक रियलिज्म" का समर्थन किया है। गोर्की ने सोवियत साहित्य के बारे में विचार करते हुए लिखा है कि "यथार्थवाद और रोमेण्टिसिज्म का सम्मिश्रण हमारे महान साहित्य की ऐसी विशेषता है जो इसे मौलिक बनाती है और एक ऐसी शक्ति है जो विश्व के अन्य साहित्यों को प्रभावित करने की क्षमता भी पैदा करती है।"15 लेकिन इसके लिए आवश्यक है एक संतुलित दृ ष्टि और दृष्टिकोण की, जिसे नयी कहानी का लेखक दरकिनार करके चलता है।

संदर्भ सूची

1. शिवप्रसाद सिंह दृ एक यात्रा सतह के नीचे – अंधेरा हँसता है पृ. –6
2. शिवप्रसाद सिंह दृ आधुनिक परिवेश और नवलेखन पृ. 23
3. कामेश्वर प्रसाद सिंह – कथाकार शिवप्रसाद सिंह पृ. 16
4. कमलेश्वर – नयी कहानी की भूमिका पृ. 165
5. शिवप्रसाद सिंह– आधुनिक परिवेश और नवलेखन पृ. 159
6. कामेश्वर प्रसाद सिंह – कथाकार शिवप्रसाद सिंह पृ. 12
7. शिवप्रसाद सिंह – अंधकूप – कर्मनाशा की हार पृ. 6
8. शिवप्रसाद सिंह – अंधकूप उस दिन तारीख थी पृ. 130
9. 10, 11, शिवप्रसाद सिंह – अंधकूप पृ. 30, 31, 36
10. शिवप्रसाद सिंह – एक यात्रा सतह के नीचे – मुरदा सराय
11. शिवप्रसाद सिंह – कुछ न होने का कुछ पृ. 10
12. शिवप्रसाद सिंह– आधुनिक परिवेश और नवलेखन पृ. 142
13. कामेश्वरप्रसाद सिंह दृ शिवप्रसाद सिंह– पृ. 126